डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

BA Part-I
Stone age का शेष भाग

डॉ० अनुपा कुमारी
History, SNSRKS

पूर्व - पाषाण युग (old stone age)

प्रागैतिहासिक काल में प्रथम चरण को विद्वानों ने पुरापाषाण काल या पूर्व पाषाण काल नाम से संबोधित किया है। ऐसा माना जाता है कि मानव का अधिकांश समय (जीवन) इसी काल में बीता है। लगभग चालीस हजार वर्ष। अन्वेषणों से पता चलता है कि इस युग में रोडेशियन का केशल त्रिनिल, पिल्ट डाउन, हिडलवर्क आदि मानव रहते थे। इस युग के अवशेष जर्मनी, इंग्लैंड, फ्रांस, भारत, जावा आदि देशों में प्राप्त हुआ है। आदि मानव पशुओं सा जीवन व्यतीत करते थे। वे बर्बर, हिंसक एवं भुक्क थे। अपने मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था और इसके लिए वे आपस में निरंतर संघर्षरत रहते थे।

भोजन - पुरापाषाण युग के आदि मानव पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर था। चाहे वह कंद-मूल हो या जानवर का शिकार वे लोग जंगलों के कन्द-मूल खाकर अथवा पशुओं का शिकार कर अपना पेट भरते थे।

वस्त्र एवं आवास - पूर्व पाषाण युग में प्रारंभ मानव पूर्णतः निर्वस्त्र रहते होंगे। लेकिन कालान्तर में उन्होंने अपनी विवेक शक्ति का उपयोग कर वृक्ष के छाल, पशुओं की खाल, पेड़ों के पत्तों से अपने शरीर को ढककर अथवा झाड़ियों

डॉ० अनुपा कुमारी
History, SNSRKS

एवं गुफाओं में रुक-छिपकर प्रतिकूल मौसम से अपने शरीर की रक्षा करते थे।

इस प्रकार उन्होंने अपने भोजन वस्त्र और आवास की पूर्ति की।

औजार का आविष्कार :—

जानवरों के शिकार करते और हिंसक जानवरों से स्वयं की रक्षा करने के लिए उन्हें औजार की आवश्यता महसूस होने लगी। अतः उन्होंने लकड़ी, पत्थर एवं हड्डियों के हथियार बनाने शुरू किये। तीर-धनुष का प्रयोग करना भी लोगों ने सीखा। इतना ही नहीं कालान्तर में पुरा-पाषाण युगीन मानवों ने बढ़ईगिरी की कला भी विकसित की। रस्सी बाँटने तथा टोकरियाँ बनाने की कला भी संभवतः प्रचलित हो गई थी। इस प्रकार मनुष्य क्रमशः विकास करते हुए हथियार और औजार का प्रयोग करना आरंभ कर दिया।

कृषि का आविष्कार —

पुरा पाषाण युग में आदि मानव पेट की ज्वाला को शांत करने के लिए जंगली कंद-मूल की खोज में यहाँ-वहाँ भटकते थे। साथ ही पशुओं के शिकार करने के काम में उन्हें जान जोखिम में भी डालना पड़ता था। पुरा पाषाण युग में वे कृषि कार्य से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। नव पाषाण युग में मानव ने कृषि का आविष्कार कर मानव जाति को अमूल्य भेंट प्रदान किया।

डॉ० अनुजा कुमारी
History, SNSRKS

आवश्यकता के अनुसार वे मानव कृषि कार्य की खोज की। अतः इसे हम मानव जाति की पहली क्रांति भी कह सकते है। वैसे यह खोज अभी तक रहस्य ही बना हुआ है इसके लिए केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। कृषि के क्षेत्र में उन्होंने सर्वप्रथम गेहूँ और जौ उपजाना शुरू किया। इसके बाद अन्य कंद-मूल, फल और सब्जियां उपजाना आरंभ किया। कृषि के आविष्कार के बाद उन मानवों का घुमक्कड़ जीवन समाप्त हो गया वे किसी निश्चित भू-भाग पर स्थायी रूप से रहने लगे। उनके जीवन में स्थिरता आ गयी। कृषि ने आदि मानव के जीवन में जानवरों के पीछे भागने के बजाय उन्हें स्थायित्व प्रदान किया।

पशु पालन — कृषि कार्य हेतु और रक्षा हेतु उन्हें जानवरों की आवश्यकता महसूस हुई। अतः वे गाय, बैल, बकरा, सूअर, भैंस आदि जानवर पालने लगे। इससे उन्हें कृषि कार्य के साथ-साथ मांस और दूध भी मिल जाता था। सम्भवतः उन्होंने सबसे पहले कुत्ते को अपना पालतू पशु बनाया।

उद्योग-धंधे — अब उनके भटकने के दिन समाप्त हो गये थे। वे स्थायी जीवन और कृषि कार्य में समय व्यतीत कर रहे थे। बचे खाली समय में वे कुछ अन्य व्यवसाय में वक्त बिताने लगे। इस पाषाण युग में चाक के आविष्कार ने मानव जीवन को एक अलग ही गति प्रदान की। वे उस चाक पर मिट्टी के बर्तन और उपयोगी वस्तु बनाने लगे।

डॉ० अनुजा कुमारी
History, SNSRKS

चाक ने यातायात के साधन का विकास किया। जिससे बैलगाड़ी और घोड़ा-गाड़ी का विकास हुआ। इसके बाद वस्त्र का निर्माण प्रारंभ हुआ। कपास से सूत और भेड़ से ऊन की प्राप्ति होने लगी।

वस्त्रों की कताई - बुनाई के लिए करघे और चरखे का प्रयोग शुरू हुआ। मछली पकड़ने के लिए जाल बनाये जाने लगे। इन सभी चीजों के विकास से मानव ज्यादा समृद्ध होने लगा। उनमें इसे संकलन करने की भावना आने लगी। जो भविष्य में सम्पत्ति संग्रह की भावना को और प्रगाढ़ किया।

हथियार — पूर्व पाषाण युग में मनुष्यों द्वारा शिकार करने और हिंसक पशुओं से अपनी रक्षा करने के लिए पत्थरों एवं हड्डियों के खुरदुरे एवं बेडौल हथियार का निर्माण किये थे, किंतु नव-पाषाण युग में हथियारों के निर्माण के उद्देश्य एवं स्वरूप पूर्णतः बदल गये। कृषि कार्य लिए पत्थरों के हल, कुदाल एवं खुरपी बनाये गये। फसल काटने के लिए हंसिया का निर्माण शुरू किया गया और अनाजों को पीसने के लिए चक्की का प्रयोग शुरू हुआ। बाद में वर्मा और देवनी द्वारा निर्मित हथियार सुन्दर एवं सुदृढ़ होते थे।

शेष अगले भाग में →

Stone age का शेष भाग →
BA-I (History, Hons)

भवन निर्माण— पूर्व पाषाण युग में मानव आंधी, गर्मी, वर्षा, ठंड आदि प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए गुफा यी झाड़ियों का सहारा लेते थे। किन्तु कृषि, पशुपालन एवं उद्योग धंधों के फलस्वरूप अब मानव जीवन स्थिर हो गया था। और लोग मकान रूपी स्थायी क्षेत्र का निर्माण करना आरम्भ कर दिये थे। प्रारंभ में तो उन्होंने झाड़ियां एवं पत्तों, फूस की झोपड़ी बनाई किन्तु कालान्तर में इन झोपड़ियों का स्थान ईंटो एवं पत्थरों ने ले लिया। मकान निर्माण ने समाज, गाँव की नींव रखनी आरंभ कर दी।

सामाजिक संगठन — कृषि, पशुपालन एवं उद्योग-धन्धों के कारण नव पाषाण युगीन मानव एक सामाजिक इकाई के रूप में संगठित होने लगे। मुहल्ले एवं गावों के बसने से पारिवारिक जीवन की परम्परा शुरू हुई। विवाह संस्कार भी नियमित रूप से होने लगे। आर्थिक भावना का भी सूत्रपात हुआ। युद्ध में बन्दी बनाये गये शत्रुओं को दास बनाया जाने लगा। कालान्तर में व्यापार एवं उद्योग-धंधों की प्रगति के चलते कई नगर भी उठ खड़े हुए।

राजनीतिक संगठन — नव पाषाण युग में